मार्क्स के चार विचार, जो आज भी ज़िंदा हैं

मैक्स सीत्ज़
बीबीसी मुंडो

07 नवम्बर 2017

Like 7.4M

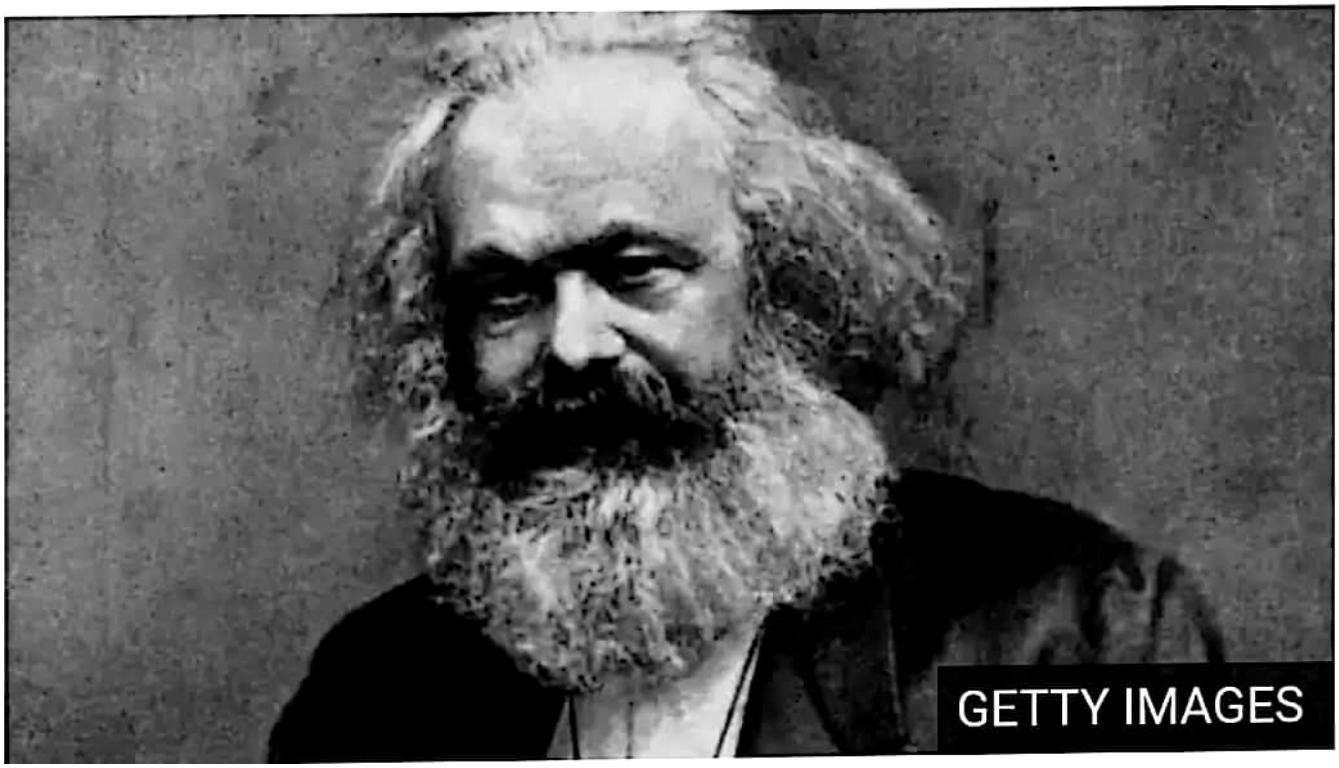

Scanned by CamScanner

2017 रूसी क्रांति का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है, लेकिन जिनके विचारों पर ये क्रांति हुई, क्या वो आज भी प्रासंगिक हैं?

हालांकि जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स ने उन्नीसवीं शताब्दी में काफ़ी कुछ लिखा, लेकिन आज भी इसमें कोई विवाद नहीं है कि उनकी दो कृतियां 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' और 'दास कैपिटल' ने एक समय दुनिया के कई देशों और करोड़ों लोगों पर राजनीतिक और आर्थिक रूप से निर्णयात्मक असर डाला था.

रूसी क्रांति के बाद सोवियत संघ का उदय इस बात का उदाहरण था. कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि बीसवीं शताब्दी के इतिहास पर समाजवादी खेमे का बहुत असर रहा है. हालांकि, जैसा मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा था, उस तरह साम्यवाद ज़मीन पर नहीं उतर पाया.

अंततः समाजवादी खेमा ढह गया और पूंजीवाद लगभग इस पूरे ग्रह पर छा गया. आईए जानते हैं, मार्क्स के वे चार विचार कौन से हैं जो साम्यवाद की असफलता के बावजूद आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं.

Scanned by CamScanner

1- राजनीतिक कार्यक्रम

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' और अपने अन्य लेखों में मार्क्स ने पूंजीवादी समाज में 'वर्ग संघर्ष' की बात की है और बताया है कि कैसे अंततः संघर्ष में सर्वहारा वर्ग पूरी दुनिया में बुर्जुआ वर्ग को हटाकर सत्ता पर कब्ज़ा कर लेगा.

अपनी सबसे प्रसिद्ध कृति 'दास कैपिटल' में उन्होंने अपने इन विचारों को बहुत तथ्यात्मक और वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषित किया है.

उनके प्रतिष्ठित जीवनी लेखक ब्रिटेन के फ़्रांसिस व्हीन कहते हैं, "मार्क्स ने उस सर्वग्राही पूंजीवाद के ख़िलाफ़ दार्शनिक तरीक़े तर्क रखे, जिसने पूरी मानव सभ्यता को ग़ुलाम बना लिया."

20वीं शताब्दी में मज़दूरों ने रूस, चीन, क्यूबा और अन्य देशों में शासन करने वालों को उखाड़ फेंका और निज़ी संपत्ति और उत्पादन के साधनों पर कब्जा कर लिया.

ब्रिटेन के स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में जर्मन इतिहासकार अलब्रेख़्त रिसल कहते हैं कि 'भूमंडलीकरण के पहले आलोचक थे मार्क्स. उन्होंने दुनिया में बढ़ती ग़ैरबराबरी के प्रति चेतावनी दी थी.'

2007-08 में आई वैश्विक मंदी ने एक बार फिर उनके विचारों को प्रासंगिक बना दिया.

Scanned by CamScanner

> *राजनीतिक दार्शनिक के रूप में मार्क्स अभी भी प्रासंगिक हैं...बहुत से लोग अपने संघर्षों में उनसे प्रेरणा लेते हैं.*
>
> *-अलब्रेख़्त रिसल, लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स*

2-मंदी का बार बार आना

पूंजीवाद के 'पिता' एडम स्मिथ के 'वेल्थ ऑफ़ नेशन' से उलट मार्क्स का मानना था कि बाज़ार को चलाने में किसी अदृश्य शक्ति की भूमिका नहीं होती.

बल्कि वो कहते हैं कि मंदी का बार बार आना तय है और इसका कारण पूंजीवाद में ही निहित है.

अलब्रेख़्त के अनुसार, "उनका विचार था कि पूंजीवाद के पूरी तरह ख़त्म होने तक ऐसा होता रहेगा."

1929 में शेयर बाज़ार औंधे मुंह गिर गया और इसके बाद आने वाले झटके 2007-08 के चरम तक पहुंच गए, जब दुनिया का वित्त बाज़ार अभूतपूर्व रूप से संकट में आ गया था.

विशेषज्ञ कहते हैं कि हालांकि इन संकटों का असर भारी उद्योगों की जगह वित्तीय क्षेत्र पर अधिक पड़ा.

Scanned by CamScanner

3-अकूत मुनाफ़ा और एकाधिकार

मार्क्स के सिद्धांत का एक अहम पहलू है- 'अतिरिक्त मूल्य.' ये वो मूल्य है जो एक मज़दूर अपनी मज़दूरी के अलावा पैदा करता है.

मार्क्स के मुताबिक़, समस्या ये है कि उत्पादन के साधनों के मालिक इस अतिरिक्त मूल्य को ले लेते हैं और सर्वहारा वर्ग की क़ीमत पर अपने मुनाफ़े को अधिक से अधिक बढ़ाने में जुट जाते हैं.

इस तरह पूंजी एक जगह और कुछ चंद हाथों में केंद्रित होती जाती है और इसकी वजह से बेरोज़गारी बढ़ती है और मज़दूरी में गिरावट आती जाती है.

इसे आज भी देखा जा सकता है.

ब्रिटिश मैग्जीन 'द इकोनॉमिस्ट' के एक हालिया विश्लेषण के अनुसार, पिछले दो दशकों में अमरीका जैसे देशों में मज़दूरों का वेतन स्थिर हो गया है, जबकि अधिकारियों के वेतन में 40 से 110 गुने की वृद्धि हुई है.

Scanned by CamScanner

4-भूमंडलीकरण और ग़ैरबराबरी

हालांकि मार्क्स के जीवनी लेखक फ़्रांसिस व्हीन कहते हैं कि पूंजीवाद अपनी कब्र खुद खोदता है, मार्क्स की ये बात ग़लत है, बल्कि इससे उलट ही हुआ है, साम्यवाद ख़त्म हुआ तो दूसरी तरफ़ पूंजीवाद सर्वव्यापी हुआ है.

लेकिन पेरिस विश्वविद्यालय में दर्शन के प्रोफ़ेसर और मार्क्सवादी विचारक जैक्स रैंसियर का कहना है कि, "चीनी क्रांति की वजह से आज़ाद हुए शोषित और ग़रीब मज़दूरों को आत्महत्या की कगार पर ला खड़ा किया गया है ताकि पश्चिम सुख सुविधा में रह सके, जबकि चीन के पैसे से अमरीका ज़िंदा है, वरना वो दिवालिया हो जाएगा."

भले ही मार्क्स अपनी भविष्यवाणी में असफल हो गए हों, पूंजीवाद के वैश्विकरण की आलोचना करने में उन्होंने ज़रा भी ग़लती नहीं की.

'कम्युनिस्ट घोषणा' पत्र में उन्होंने तर्क किया है कि पूंजीवाद के वैश्विकरण ही अंतरराष्ट्रीय अस्थिरता का मुख्य कारण बनेगा. और 20वीं और 21वीं शताब्दी के वित्तीय संकटों ने ऐसा ही दिखाया है.

यही कारण है कि भूमंडलीकरण की समस्याओं पर मौजूदा बहस में मार्क्सवाद का बार बार ज़िक्र आता है.

Scanned by CamScanner

क्या गलत साबित हो गए कार्ल मार्क्स?

3 अप्रैल 2013

7 वर्गों में बंटा ब्रितानी समाज

कार्ल मार्क्स ने कहा था कि समाज में दो ही वर्ग होते हैं– पूंजीपति और सर्वहारा. लेकिन बीबीसी का एक सर्वे बताता है कि ये धारणा अब पुरानी हो चुकी है. इस नए सर्वे के मुताबिक ब्रिटेन का समाज आज 7 वर्गों में विभाजित हो चुका है.

Scanned by CamScanner

समाज विभाजन को समझने के लिए किए गए इस सर्वे में 1 लाख 61 हजार लोगों ने हिस्सा लिया. इसे नाम दिया गया ग्रेट ब्रिटिश क्लास सर्वे.

इस सर्वे में कुछ नए मापदंड भी जोड़े गए. अब तक यही माना जाता था कि वर्ग विभाजन को समझने के लिए लोगों के व्यवसाय, पैसा और शिक्षा के बारे में जानना जरूरी है. लेकिन इस सर्वे में पहली बार सामाजिक और सांस्कृति गतिविधियों को भी शामिल किया गया है.

बीबीसी लैब यूके के इस सर्वे में कहा गया कि वर्ग को समझने के लिए आर्थिक, सामजिक और सांस्कृतिक आधार को भी समझना जरूरी है. सर्वे में आर्थिक पूंजी को आय, बचत और घर के रूप में मापा गया जबकि समाजिक पूंजी को समाजिक हैसियत और पहचान के आधार पर नापा गया.

वर्ग विभाजन कुछ इस तरह से है –

1) उच्च वर्ग-- ये वर्ग समाज का सबसे ऊपरी तबका है. तीनों मापदंडों में ये बाकी के 6 वर्गों से आगे है.

2) मध्य वर्ग—वर्ग विभाजन में दूसरे पायदान पर. ये वर्ग सांस्कृतिक पूंजी के मामले में सबसे आगे है. ये समाज का सबसे बड़ा तबका है.

3) तकनीकी मध्य वर्ग—ये समाज का तीसरा वर्ग है जो पैसेवाला तो है लेकिन समाजिक हैसियत और सांस्कृतिक पूंजी के मामले में पीछे है.

Scanned by CamScanner

3) तकनीकी मध्य वर्ग—ये समाज का तीसरा वर्ग है जो पैसेवाला तो है लेकिन समाजिक हैसियत और सांस्कृतिक पूंजी के मामले में पीछे है.

4) समृद्ध कामगार--– ये वर्ग समाजिक विभाजन में चौथे नंबर है. सांस्कृतिक सामाजिक रूप से सक्रिय लेकिन आर्थिक पैमाने पर ये मध्यम स्तर का है.

5) पारंपरिक कामगार वर्ग -– ये वर्ग हर पैमाने पर कमजोर है लेकिन पूरी तरह से साधनहीन नहीं है. इस वर्ग के पास घर भी हैं.

6) उभरते हुए सेवक कामगर—इस वर्ग में ज्यादातर शहरों के युवक शामिल हैं. इनके पास सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी पर्याप्त मात्रा में है लेकिन आर्थिक पैमाने पर ये तुलानात्मक रूप से कमजोर हैं.

7) सर्वहारा वर्ग--– ये समाज का सबसे निचला तबका है जो रह तरह से कमजोर है. आर्थिक, समाजिक और सांस्कृतिक हर पायदान पर ये वर्ग सबसे नीचे आता है.

इस सर्वे को करने वाले शोधकर्ताओं का कहना है कि उच्च वर्ग की पहचान तो पहले भी की गई है लेकिन ये पहली बार है जब समाज के वर्ग विभाजन को बड़े पैमाने पर समझने की कोशिश की गई है. समाजशास्त्रियों के मुताबिक वर्ग विभाजन को समझने की कोशिश में अब तक मध्य वर्ग और कामगर वर्ग पर ही जोर दिया जाता था लेकिन ये पहली बार है जब व्यापक पैमाने पर वर्ग विभाजन को समझने की कोशिश की गई है.

Scanned by CamScanner

मैनचेस्टर युनिवर्सिटी में समाज शास्त्र के प्रोफेसर फियोना देविना का कहना है कि ये वर्ग विभाजन 21 वीं शताब्दी में वर्ग विभाजन को समझने में मदद करता है. वो कहती हैं, “ये सर्वे हमें ये समझने में मदद करता है कि आज के समय में वर्ग विभाजन आखिर है कैसा. ये वर्ग विभाजन की संपूर्ण तस्वीर उपलब्ध कराता है. ये हमें नीचे तक पहुंचने में मदद करता है.”

Scanned by CamScanner

मार्क्स की वसीयत ऑनलाइन

12 अगस्त 2010

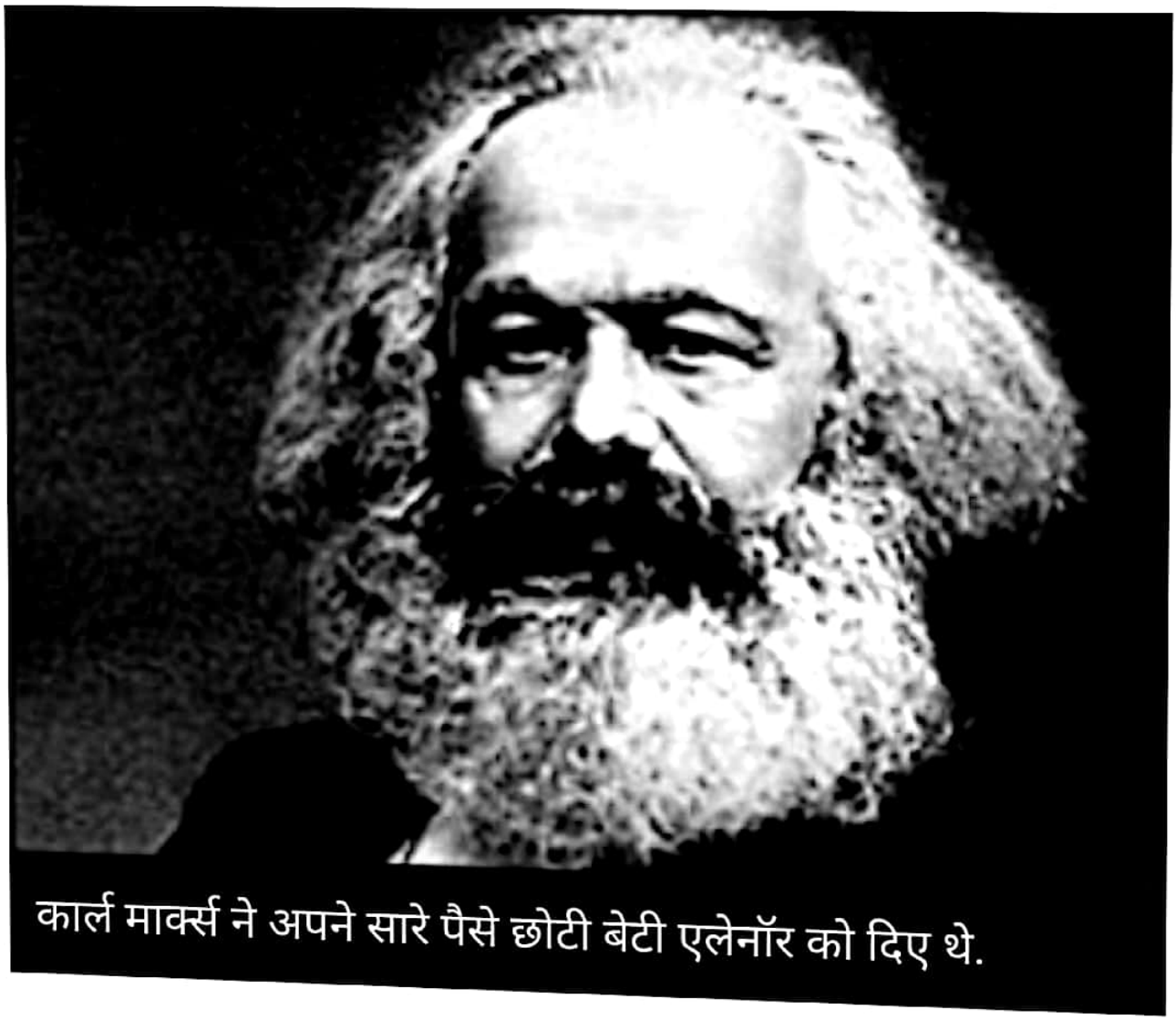

कार्ल मार्क्स ने अपने सारे पैसे छोटी बेटी एलेनॉर को दिए थे.

बड़े लोगों की बात बड़ी होती है लेकिन कई बार ये बातें पता नहीं नहीं चलती.

Scanned by CamScanner

मसलन कार्ल मार्क्स आखिरी दिनों में ग़रीब थे लेकिन किसी को नहीं पता कि उन्होंने अपनी थोड़ी सी दौलत सबसे छोटी बेटी एलेनॉर को ही क्यों दी.

वैसे मार्क्स के सात बच्चे थे लेकिन उन्होंने एलेनॉर के नाम 250 पाउंड किए जिसकी आज क़ीमत 23000 पाउंड होगी.

असल में अब इन रहस्यों पर से पर्दा उठ सकेगा क्योंकि कई प्रसिद्ध लोगों की वसीयतों को पहली बार ऑनलाइन किया जा रहा है. इस काम में यानी वसीयतों को डिजीटल रुप देने में डेढ़ साल का समय लगा और इसमें 20 अरब डॉलर की राशि के बारे में जानकारी मिली है.

एक और बानगी देखिए..रिकार्डों के अनुसार किसी ज़माने में धनी रहे ध्रुवीय खोजी सर अर्नेस्ट शैकल्टन की जब मौत हुई तो उनके पास भी बहुत कम पैसे थे.

चार्ल्स डार्विन ग़रीबी में नहीं मरे. उनकी वसीयत में क़रीब 13 मिलियन पाउंड का ज़िक्र था और लेखक चार्ल्स डिकन्स की वसीयत सात मिलियन पाउंड की थी.

प्रोबेट कैंलेंडर बुक्स फॉर इंग्लैंड एंड वेल्स ने कई नामचीन हस्तियों की वसीयतों को ऑनलाइन किया है.

असल में इन हस्तियों के परिवारों में झगड़ों और कई दावेदारों के कारण कई बार लाखों का हिसाब ही नहीं मिल पाता है. इन ऑनलाइन रिकार्डों के ज़रिए अब लोगों को सच्चाई का पता लग सकेगा.

Scanned by CamScanner

नेशनल आर्काइव्स के फैमिली हिस्ट्री विशेषज्ञ ऑड्रे कोलिंस कहते हैं कि वसीयतों से परिवार के इतिहास के बारे में जानने में बहुत जानकारी मिलती है.

वो कहते हैं, " मामला पैसे का होता है इसलिए सभी नाम इसमें दिखते हैं. विधवा, अलग हुए बच्चे, पुराने संबंध बहुत कुछ मिलता है यहां जिसकी आम तौर पर कई जानकारी नहीं होती."

नेशनल आर्काइव्स ने 2004 में 1384 से लेकर 1858 के बीच लिखी गई दस लाख वसीयतों को ऑनलाइन किया था जिसमें शेक्सपीयर की वसीयत भी थी.

अभी जारी की गई वसीयतों में 1858 के बाद की वसीयतें हैं.

Scanned by CamScanner